'हीरे तुल्य जीवन बनाने वाली अनमोल शिक्षायें'

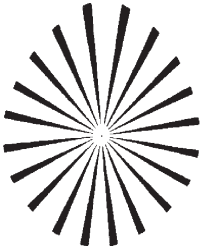

1996

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
आबू पर्वत-307501 (राजस्थान)

प्रकाशक :

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

आबू पर्वत-307501 (राजस्थान)

प्रथम मुद्रण :

अप्रैल 1996 (10,000)

मुद्रक :

ओम् शान्ति प्रेस, शान्तिवन, तलहटी

आबूरोड-307026

☎22678, 22340

© **Copyright :** Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa-Vidyalaya, Mount Abu (Raj)
No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

प्रस्तावना

सर्व के कल्याणकारी अव्यक्त बापदादा ने हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में हर एक को बेदाग़ हीरा बनने की शुभ प्रेरणायें दी हैं। हर आत्मा भिन्न-भिन्न बंधनों से कैसे मुक्त बनें एवं सच्ची स्वतन्त्रता वा जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करे, उसका विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण किया है। 1995-96 की यह अव्यक्त वाणियां बहुत ही गहरी, गम्भीर, गुह्य रहस्यों से भरपूर हैं। इनका हम जितना अध्ययन करें उतना कम है। इन शिक्षाओं को धारण करने का पूरा-पूरा पुरूषार्थ करने की

जरूरत है। यूं तो विस्तार में सर्व वाणियों को पढ़ने में अद्भुत रस आता है और अपार शक्ति मिलती है परन्तु फिर भी पुरूषार्थ को सहज करने के लक्ष्य से कुछेक महावाक्य इन पृष्ठों में संजो दिये गये हैं, जिस पर ध्यान देने से हमारी स्वउन्नति अवश्य होगी।

साथ-साथ विश्व कल्याण-कारी बापदादा ने इस हीरक जयन्ती वर्ष के अन्तर्गत देश-विदेश में धूमधाम से ईश्वरीय सेवा करने के लिए विशेष दिशा-निर्देश भी दिये हैं। उन सबका संक्षिप्त सार संग्रह इस पुस्तिका में है।

ओम् शान्ति।

हीरे तुल्य जीवन बनाने वाली अनमोल शिक्षायें

7.11.95

➢ यदि बच्चों का बाप से पदमगुणा प्यार है तो उस प्यार का सबूत है समान बनना। प्यार के पीछे जान देने के लिए भी तैयार होते हैं। बापदादा जान तो लेते नहीं हैं क्योंकि जान से तो सेवा करनी है। प्यार की निशानी है – जो कहे वो करना, इसको कहते हैं न्योछावर होना। प्यार

का अर्थ ही है जो प्यार वाला पसन्द करे वो करना।

➢ ब्रह्मा बाप और शिव बाप की विशेष पसन्दी वा ज्ञान का मूल फाउण्डेशन है– पवित्रता। पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। व्यर्थ संकल्प चलना या चलाना–यह भी पवित्रता नहीं है क्योंकि कोई भी विकार जब आता है तो पहले संकल्प में आता है। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है। यदि किसी भी आत्मा के प्रति व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो बाप के प्यार के पीछे व्यर्थ संकल्प न्योछावर करो क्योंकि

अभी तक पांच ही विकारों के व्यर्थ संकल्प मैजारिटी के चलते हैं।

➢ ज्ञानी आत्माओं में या तो अपने गुण का, अपनी विशेषता का अभिमान आता है या तो जितना आगे बढ़ते हैं उतना नाम, मान, शान के व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होते हैं जो बहुत नुक़सान करते हैं। अभिमान और अपमान – यही दो बातें आजकल व्यर्थ संकल्प का कारण हैं। इन दोनों को अगर न्योछावर कर दो तो बाप समान सहज बन जायेंगे।

➢ पवित्रता फाउण्डेशन है लेकिन सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना, ये

तो कॉमन बात है, इसमें खुश नहीं हो जाओ। दृष्टि-वृत्ति में भी पवित्रता को और अण्डरलाइन करो। लेकिन मूल फाउण्डेशन – अपने संकल्प को शुद्ध, ज्ञान स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनाओ। संकल्प में कमज़ोरी बहुत है। क्या करें, कर नहीं सकते हैं, पता नहीं क्या हो गया.....यह पवित्र आत्मा बोल नहीं सकती क्योंकि त्रिकालदर्शी आत्मायें हो।

➢ अब नये साल में व्यर्थ के समाप्ति का नया खाता शुरू करो और अपनी अवस्था का पोतामेल देखो कि व्यर्थ संकल्प किस परसेन्टेज़ तक न्योछावर

हुए हैं? कारण नहीं सुनाना, निवारण स्वरूप बनना। समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप बनना।

➢ जैसे शास्त्रों में शंकर के लिए दिखाते हैं – नृत्य करते-करते सारा विनाश कर दिया। ऐसे आप भी सभी विघ्नों का विनाश करना। जैसे डांस के भिन्न-भिन्न पोज़ रखते हो ऐसे एक-एक विकल्प को अच्छी तरह से ऐसे खत्म करना जो नाम-निशान भी नहीं रहे। कभी ऐसी उल्टी डांस नहीं करना जो मन को भाती न हो।

➢ ज्ञान मार्ग में गम्भीरता का गुण बहुत आगे बढ़ाता है। जो गम्भीर

होता है उसका फुल जमा होता है। जैसे जगदम्बा गम्भीरता की देवी रही, ऐसे आप सभी को भी गम्भीर बनना है। बापदादा सभी को कहते हैं कि गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो, वर्णन करके खत्म नहीं करो। चाहे अच्छा वर्णन करते हो, चाहे बुरा। अच्छा अपना अभिमान और बुरा किसका अपमान कराता है। तो हर एक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता दिखाई दे। अभी गम्भीरता की बहुत-बहुत आवश्यकता है क्योंकि जो गम्भीरता का प्रभाव पड़ता है वो वाणी का नहीं पड़ता।

16.11.95

➢ बापदादा ने विशेष अमृतवेले का समय आप बच्चों के लिए रखा है क्योंकि अमृतवेला सारे दिन का आदि समय है। आदि - समय पर बाप का स्नेह जो दिल में फुल धारण कर लेते हैं उन्हें और कोई का स्नेह आकर्षित नहीं करता। यदि बीच में जगह होगी तो माया भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित करती रहेगी।

➢ यदि किसी से किसी भी कारण से थोड़ा भी लगाव हो गया तो यह लगाव पुरानी दुनिया तक भी ले जा सकता है। लेकिन यदि दिल में परमात्म प्यार, परमात्म शक्तियाँ,

परमात्म ज्ञान पुरुल है, ज़रा भी खाली न हो तो कभी भी किसी भी तरफ लगाव या स्नेह जा नहीं सकता।

➢ चाहे कोई सूरत से, कोई विशेषता से, कोई गुण से बहुत सुन्दर लगता हो लेकिन है तो मिट्टी ना। कई बच्चे कहते हैं मेरा इनसे कोई लगाव नहीं है लेकिन इनका ये गुण बहुत अच्छा है। इसमें सेवा की विशेषता बहुत है इसलिए थोड़ा सा स्नेह है। लेकिन यदि किसी भी व्यक्ति के तरफ या वैभव के तरफ बार-बार संकल्प भी जाता है कि यह बहुत अच्छा है तो यह भी आकर्षण

है। इसलिए जब कोई भी विशेषता या गुणों को, सेवा को देखते हो तो दाता को नहीं भूलो। वह व्यक्ति भी लेवता है, दाता नहीं है।

➢ बापदादा चाहते हैं कि डायमण्ड जुबली में जिस बच्चे को देखें–वह लगाव मुक्त हो। जब बाप के साथ आप सबने प्रकृति को भी पावन बनाने का बीड़ा उठाया है तो बापदादा चाहते हैं कि सारे विश्व में हर एक बच्चा साधनों से वा व्यक्तियों से लगाव मुक्त हो। साधन यूज़ करना और चीज़ है परन्तु लगाव अलग चीज़ है।

➢ यह वर्ष बापदादा लगाव-मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं। इसलिए कोई भी कारण हो, चाहे हिमालय का पहाड़ भी गिर जाये, लेकिन आप उस हिमालय के पहाड़ से भी किनारे निकल आओ। इतनी हिम्मत हो।

➢ अगर सम्पूर्ण लगाव मुक्त अनुभव करेंगे तो क्रोध मुक्त भी स्वत: हो जायेंगे। क्योंकि क्रोध तब आता है जब आपके संकल्प पूर्ण नहीं होते। कोई महाक्रोध नहीं भी करे, लेकिन व्यर्थ संकल्प भी चले तो पवित्रता नहीं हुई। ऑफर करना, विचार देना इसके लिए छुट्टी है लेकिन विचार

वेः पीछे उस विचार को इच्छा वेः रूप में बदली नहीं करो। जब संकल्प, इच्छा वेः रूप में बदलता है तब चिड़चिड़ापन आता है वा मुख से भी क्रोध होता है या हाथ पांव भी चलता है। ये हुआ महाक्रोध। तो स्वार्थ या ईर्ष्या वेः वश होने से ही क्रोध पैदा होता है। इसलिए 100 परसेन्ट लगाव मुक्त बनो तो क्रोध समाप्त हो जायेगा। अगर किसी वेः प्रति स्वप्न मात्र भी लगाव हो, स्वार्थ हो तो स्वप्न में भी समाप्त कर देना।

➢ कई कहते हैं कि स्वप्न आते हैं बाकी कर्म में हम नहीं आते। लेकिन यदि कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न,

लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। इसलिए सोने समय सारे दिन का अपना पोतामेल बापदादा को देकर सोओ क्योंकि बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो। चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपनी बुद्धि को खाली करके फिर बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। कभी भी व्यर्थ बातों का वर्णन करते-करते सोना नहीं – ये अलबेलापन है, ये फरमान को उल्लंघन करना है। इसलिए आदि और अन्त अच्छा होगा तो मध्य स्वत: ही ठीक होगा।

25.11.95

➢ *पुरुषार्थ ढीला वा कम होने के तीन कारण हैं:-*

1-परमत का प्रभाव:- चलते-चलते श्रीमत में आत्माओं की मत मिक्स करना ही परमत है। कई बच्चे ब्राह्मण संसार का समाचार सुनने का बहुत इन्ट्रेस्ट रखते हैं। लेकिन बाप की आज्ञा है कि सुनते हुए नहीं सुनो। जब कोई ऐसी बातें सुनाये तो उसको समझाकर उन बातों से मुक्त करो, सुन करके इन्टरेस्ट नहीं बढ़ाओ। सदा के लिए फुलस्टॉप लगा दो।

➢ यदि किसी आत्मा के प्रति सुना भी तो उसके प्रति संकल्प में भी

घृणा भाव नहीं हो। नहीं तो थोड़ा-थोड़ा किचड़ा इकट्ठा होते-होते घृणा भाव हो जाता है या चाल-चलन में अन्तर आ जाता है और उस आत्मा के प्रति सेवा करने की भावना नहीं रहती। इसको कहा जाता है–श्रीमत में परमत मिलाना। क्योंकि एक की बात दूसरे को सुनाने से भाव बदल जाता है और परमत का प्रभाव वायुमण्डल को खराब कर देता है।

2-परचिंतन :- परचिन्तन करने वाले का स्वचिन्तन कभी नहीं चलेगा। परचिन्तन वाला अपनी गलती भी दूसरे पर लगायेगा। बात बनाने में नम्बरवन होगा। ज्ञान की पॉइन्ट्स

रिपीट करना या ज्ञान की पॉइन्ट्स को सुनना-सुनाना – यह ज्ञान चिंतन वा मनन है, स्वचिन्तन नहीं।

➢ स्वचिन्तन का महीन अर्थ है अपने सूक्ष्म कमज़ोरियों को अपनी छोटी-छोटी गलतियों को चिन्तन करके मिटाना, परिवर्तन करना। इसलिए वैल्यूज पर जो दूसरों को सुनाते हो वह पहले स्वयं में चेक करो क्योंकि जब फाइनल रिजल्ट निकलेगी तो उसमें पहली मार्क्स उन्हें मिलेंगी जो प्रैक्टिकल धारणा स्वरूप होंगे।

➢ सेवा में बुद्धि को बिजी रखना – यह साधन अच्छा है। लेकिन जो

सेवा आपको हलचल में लाये, जिससे आपकी अवस्था गिरावट में आ जाये – वह सेवा, सेवा नहीं है। क्योंकि सच्ची सेवा, प्यार से सेवा, सभी की दुआओं से सेवा, उसका प्रत्यक्षफल खुशी होती है लेकिन सेवा में फीलिंग आना यह फ्लू की बीमारी है।

➢ अभी प्रत्यक्षता के हिसाब से सेवा आपके पास खुद चलकर आयेगी। सच्चे सेवाधारी को और कोई सेवा नहीं भी मिले लेकिन वो अपने चेहरे वा चलन से सेवा करेंगे। उनका चेहरा बाप का साक्षात्कार करायेगा, चलन बाप की याद दिलायेगी। ये

सेवा नम्बरवन है। इसमें स्वार्थ भाव नहीं होता। यदि मांग कर सेवा का चांस लिया या सोचते मुझे चांस मिलना ही चाहिए... तो इसमें भी मार्कस कट होती हैं। ये धर्मराज़ का खाता कोई कम नहीं है। इसलिए नि:स्वार्थ सेवाधारी बनो। सच्चा डायमण्ड बनना है तो यह हिसाब-किताब भी समझ लो, ऐसे अलबेले नहीं चलो।

3-परदर्शन:- जितना बड़ा संगठन है उतनी बड़ी बातें भी होंगी – यही तो पेपर हैं। जितनी बड़ी पढ़ाई उतने बड़े पेपर भी होते हैं। तो किसी बात को कल्याण की भावना से सुनना

और देखना–वो ठीक है लेकिन अपनी अवस्था को हलचल में लाकर देखना, सुनना या सोचना – यह रांग है। यदि आप अपने को जिम्मेवार समझते हो तो जिम्मेवारी वे पहले अपनी ब्रेक को पॉवरफुल बनाओ। पहले यह चेक करो कि सेकण्ड में बिन्दी लगती है या लगाते हो बिन्दी और लग जाता है क्वेश्चनमार्क? यह रांग है। देखा, सुना, और जहाँ तक हो सका कल्याण किया, फुलस्टॉप। अगर ऐसी स्थिति है तो जिम्मेवारी लो, नहीं तो देखते भी नहीं देखो, सुनते भी नहीं सुनो, स्वचिन्तन में रहो। फायदा इसमें है।

4.12.95

➢ इस ब्राह्मण जीवन में निश्चय का फाउण्डेशन मज़बूत है तो सहज और तीव्र गति से सम्पूर्णता तक पहुँचना निश्चित है। यथार्थ निश्चय है – स्वयं को भी आत्म स्वरूप में जानना, मानना, चलना और बाप को भी जो है वैसे जानना। लेकिन यदि यथार्थ निश्चय का फाउण्डेशन पक्का नहीं है, तो चलते-चलते जो शुरु की खुशी वा जोश है, उसमें फर्क आ जाता है। तो चेक करो कि निश्चय का फाउण्डेशन पक्का है? अगर नम्बरवन निश्चय का फाउण्डेशन पक्का है तो मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा क्योंकि

आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है।

➢ जब कहते हो सर्वशक्तिमान् बाप हमारे साथ है, तो फिर अपवित्रता आ नहीं सकती। लेकिन यदि आती है तो चेक करो कि माया ने कोई चोर-गेट तो नहीं बनाकर रखा है? आपके जो विशेष स्वभाव या संस्कार कमज़ोर होंगे उसे ही माया अपना गेट बना देगी तो गेट खुला हुआ है तभी माया आती है। लेकिन यदि सर्वशक्तिमान् साथ है तो ये कमज़ोरी रह नहीं सकती।

➢ किसी भी विकार की आकर्षण

अपवित्रता है। जैसे आगे बढ़ते हो तो लोभ भी रॉयल और सूक्ष्म रूप में आता है। उसका रायॅल रूप है – अभिमान वा अपमान की महसूसता। यदि किसी एक भी विकार को आपने चांस दे दिया तो और जो छिपे हुए हैं वो भी समय प्रमाण अपना चांस ले लेंगे। फिर कहेंगे कि पहले जैसा नशा अभी नहीं है, पहले बहुत अच्छा था, पहले अवस्था बड़ी अच्छी थी, अभी पता नहीं क्या हो गया है! तो यह माया चोर-गेट से आ गई।

➢ सेवा का चांस मिलता है तो खुशी से करो, चाहना नहीं रखो। क्योंकि फाइनल नम्बर सिर्फ इस बात से नहीं

मिलेंगे कि इसने इतने भाषण किये, इतने सेन्टर बनाये, सेन्टर बनाना बड़ी बात नहीं है लेकिन योग्य कितनी आत्माओं को बनाया? जितनों को सुख दिया, जितना स्वयं शक्तिशाली रहे, उसी प्रमाण नम्बर मिलेंगे। इसीलिये ये भी चाहिये-चाहिये खत्म कर दो। नहीं तो योग नहीं लगेगा।

➢ निश्चयबुद्धि का अर्थ है विजयी। अगर कोई हिसाब-किताब आता भी है तो मन को नहीं हिलाओ। स्थिति को नीचे-ऊपर नहीं करो। चलो आया और फट से उसको दूर से ही खत्म कर दो। अभी योगी बनो, योद्धे नहीं बनो।

➢ यदि ज्ञान योग अच्छा लगता है, तो अच्छा लगना माना कर्म में लाना। ज्ञान माना आत्मा, परमात्मा, ड्रामा....यह कहना नहीं। ज्ञान का अर्थ है समझ और समझदार की निशानी है – कभी धोखा नहीं खाना।

➢ योगी की निशानी है – सदा क्लीन और क्लियर बुद्धि। योगी कभी नहीं कहेगा कि पता नहीं..। उसकी बुद्धि सदा ही क्लीयर होगी।

➢ धारणा स्वरूप की निशानी है – जिम्मेवारी सम्भालते हुए सदा डबल लाइट। चाहे मेला हो, चाहे झमेला हो–दोनों में डबल लाइट।

➢ सेवाधारी की निशानी है–सदा निमित्त और निर्माण भाव। तो ये सभी अपने में चेक करो। अनुभव करो–सर्वशक्तिमान् बाप साथ है। बस एक बात भी अनुभव किया तो सबमें पास हो जायेंगे।

➢ बापदादा की आश है कि किसी भी सेवाकेन्द्र पर एक आत्मा भी कमज़ोर नहीं दिखाई दे। निर्विघ्न सेवाकेन्द्र हो तब मार्क्स मिलेंगी। बापदादा इसमें खुश नहीं होते कि इस ज़ोन में हज़ार सेन्टर हैं, हज़ार गीता पाठशालायें हैं। लेकिन ज़ोन में कोई खिटखिट नहीं हो, कोई

कम्पलेन्ट नहीं हो।

➢ ब्रह्मावुकुमार और ब्रह्मावुकुमारियाँ बनना माना मिलन मेला मनाना, न कि झमेला करना। झमेला करके ब्राह्मण नाम को खराब नहीं करो। ब्राह्मण माना विजयी। अगर झमेला करते हैं तो क्षत्रिय हैं, न कि ब्राह्मण। तो आज यही संकल्प पक्का करो कि मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क में झमेला मुक्त बनना है। व्यर्थ संकल्प का भी झमेला न हो।

➢ झमेला मुक्त होने की सबसे सहज विधि है कि पहले स्वयं को झमेला मुक्त करो। दूसरे के पीछे नहीं पड़ो।

जहाँ झमेला हो वहाँ से अपने मन को, बुद्धि को किनारे कर लो क्योंकि झमेले पहाड़ के समान हैं। पहाड़ से टकराने के बजाए किनारा कर लो या उड़ती कला से झमेले के पहाड़ के भी ऊपर चले जाओ। अमृतवेले से ये स्वयं से संकल्प करो कि मुझे झमेला मुक्त बनना है। बाकी तो है ही झमेलों की दुनिया, झमेले तो आयेंगे ही। झमेला नहीं आवे–यह नहीं सोचो। झमेला मुक्त बनना है–ये सोचो। तब स्वयं निर्विघ्न, श्रेष्ठ डायमण्ड बनकर डायमण्ड जुबली मना सकेंगे।

13.12.95

➢ सर्व मनुष्यात्माओं के पूर्वज, सारे वृक्ष का फाउण्डेशन, ऊंचे ते ऊंचे बाप की पहली रचना आप ब्राह्मण आत्मायें हो। ऐसे स्वमान में स्थित रह अपने संकल्प और बोल की इकॉनामी करो। समय को बचाओ। कभी भी अन्जान बन माया के चक्कर में नहीं आओ क्योंकि माया के पास फंसाने के फेस (चेहरे) बहुत हैं। जिस समय जो रूप धारण करना चाहे उस समय कर लेती है और अगर जाने-अनजाने फंस गये तो निकलने में बहुत टाइम जायेगा। संगम का एक सेकण्ड भी यदि व्यर्थ जाता है तो एक सेकण्ड व्यर्थ जाना अर्थात्

एक वर्ष गँवाना है क्योंकि इस थोड़े से समय में जो बनना है, जो जमा करना है वो अभी बन सकते हो।

➢ विश्व राज्य अधिकारी बनने का गुह्य रहस्य

जो संगम पर बाप के दिल तख्तनशीन स्वत: और सदा रहते हैं वह राज्य अधिकारी बनते हैं।

जो सदा आदि से अन्त तक स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता के व्रत में रहे हैं, स्वप्न तक भी अपवित्रता को टच नहीं किया है ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें तख्तनशीन होती हैं।

जिसने चारों ही सब्जेक्ट में अच्छे मार्क्स लिये हैं, आदि से अन्त तक अच्छे नम्बर से पास हुए हैं, उसे ही पास विद् ऑनर कहा जाता है। जो आदि से चारो ही सब्जेक्ट में बाप के दिल पसन्द हैं वो तख्त ले सकते हैं।

जो ब्राह्मण संसार में सर्व के प्यारे, सर्व के सहयोगी रहे हैं, ब्राह्मण परिवार में हर एक दिल से सम्मान करता है – ऐसा सम्मानधारी तख्त नशीन बन सकता है। तो चेक करो हमारा पद क्या होगा?

➢ कई बच्चे और सब्जेक्ट में आगे

चले जाते हैं लेकिन प्रैक्टिकल धारणा में जैसा समय वैसा अपने को मोल्ड नहीं कर पाते। मानों आप बिल्कुल राइट हो और दूसरा बिल्कुल ही रॉंग है, फिर भी जैसा समय, जैसा वायुमण्डल वैसे स्वयं को मिटाना है, समाना है या किनारा कर लेना है। ये मरना ही सदा के लिये जीना है। इस मरने से स्वर्ग का अधिकार मिल जाता है।

➢ जैसे हिम्मत से मरजीवा बनने में भय नहीं किया, ऐसे इसमें भी खुशी-खुशी से परिवर्तन करो क्योंकि यह मरना नहीं है लेकिन अपने धारणा की सब्जेक्ट में नम्बर लेना

है। सहन करने में घबराओ मत।

➢ कई बच्चे सहन करते भी हैं लेकिन मज़बूरी से सहन करना और मोहब्बत में सहन करना – इसमें अन्तर है। किसी बात के कारण सहन नहीं करते हो लेकिन बाप की आज्ञा है सहनशील बनो। तो परमात्मा की आज्ञा मानना – ये खुशी की बात है। सहन कर ही रहे हो तो क्यों नहीं खुशी से ही करो। जब कोई व्यक्ति सामने आता है तो मज़बूरी लगती है और बाप सामने आये, तो मोहब्बत लगेगी।

➢ अब यह मरना शब्द परिवर्तन

करो, ऐसे बोल नहीं बोलो। शुद्ध भाषा बोलो। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में यह शब्द है ही नहीं। कई बच्चे सारे दिन में ऐसे व्यर्थ बोल या मज़ाक वेः बोल बहुत बोलते हैं। अच्छे शब्द नहीं बोलेंगे लेकिन कहेंगे मेरा भाव नहीं था, यह तो मज़ाक में कह दिया। लेकिन ऐसा मज़ाक आपवेः नियमों में नहीं है इसलिए मज़ाक करो लेकिन ज्ञानयुक्त, योगयुक्त। ऐसी मज़ाक नहीं करो जिससे दूसरे की स्थिति डगमग हो जाए, क्योंकि यह भी दु:ख देना है।

➢ जिसवेः अन्दर कोई भी इच्छा

होगी तो वह अच्छा बनने नहीं देगी। ये इच्छा ऐसी चीज़ है जैसे धूप में खुद की परछाई.. आप उसको पकड़ने की कोशिश करो, तो पकड़ नहीं सकते लेकिन पीठ करके आ जाओ तो वो आपके पीछे-पीछे आयेगी। तो इच्छा अपने तरफ आकर्षित कर रुलाने वाली है और इच्छा को छोड़ दो तो इच्छा आपके पीछे-पीछे आयेगी। मांगने वाला कभी भी सम्पन्न नहीं बन सकता।

➢ कोई भी हद की इच्छाओं के पीछे भागना ऐसे ही है - जैसे मृगतृष्णा। अल्पकाल का कुछ नाम मिल जाये,

कुछ शान मिल जाये, कभी हमारा भी नाम विशेष आत्माओं में आ जाये, हम भी बड़े भाई-बहनों में गिने जायें, आखिर हमको भी तो चांस मिलना चाहिए - इस मांगने से सदा बचकर रहो। छोटा रहना कोई खराब बात नहीं है। छोटे शुभान अल्लाह हैं।

➢ डायमण्ड जुबली के पहले विशेष अटेन्शन देकर ऐसे व्यर्थ बोल जो किसको भी अच्छे नहीं लगते, उन्हें सदा के लिए समाप्त कर दो। क्योंकि अपशब्द, व्यर्थ शब्द या ज़ोर से बोलना ....यह अनेकों को डिस्टर्ब करना है। ये नहीं बोलो-मेरा तो

आवाज़ ही बड़ा है। जो काम चार शब्दों में हो सकता है वो 12-15 शब्दों में नहीं बोलो। ''कम बोलो, धीरे बोलो''। बोल की इकॉनामी करो, अपने बोल की वैल्यू रखो। व्यर्थ बोल वा डिस्टर्ब करने वाले बोल से स्वयं को मुक्त करो तो अव्यक्त फरिश्ता बनने में आपको बहुत मदद मिलेगी।

➢ आपके बोल सदा सत् वचन अर्थात् कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले वचन हों। यह जो किसी को चलते-फिरते हंसी में कह देते हो – कि ये तो पागल है, ये तो बेसमझ है .. ब्राह्मणों के मुख से ऐसे शब्द

निकलना, ये भी श्राप देना है। तो किसको श्रापित नहीं करो, सुख दो। युक्ति-युक्त बोल बोलो और काम का बोलो, व्यर्थ नहीं बोलो। जब बोलना शुरू करते हो तो एक घण्टे में चेक करो कि कितने बोल व्यर्थ हुए और कितने सत् वचन हुए? बोल की वैल्यु समझो। अपशब्द नहीं बोलो, शुभ शब्द बोलो। इसमें दूसरे को नहीं देखना। अपने को देखो–मैंने बाप की श्रीमत को कितना अपनाया है?

➢ आप ब्राह्मण आत्मायें संगमयुग पर डायरेक्ट परमात्म प्यार के अधिकारी हो। इस जीवन में सर्व प्राप्तियां हैं, इसलिए कुछ भी हो जाए लेकिन सर्व प्राप्तिवान अपनी प्रसन्नता छोड़ नहीं सकते। ऐसे भी नहीं कह सकते कि क्या करूँ मैं बीमार हूँ .... अगर तन में कोई बीमारी है भी तो भी मन में बीमारी का संकल्प नहीं आना चाहिए।

➢ आजकल के हिसाब से दवाइयाँ खाना – बड़ी बात नहीं है क्योंकि कलियुग का वर्तमान समय सबसे शक्तिशाली प्रूट ये दवाइयाँ हैं, तो

प्यार से खा लो। दवाई कांसेस, बीमारी कांसेस होकर नहीं खाओ। तन की बीमारी होनी ही है, नई बात नहीं है। इसलिए बीमारी से कभी घबराना नहीं। बीमारी आई और उसको फ्रूट थोड़ा खिला दो और विदाई दे दो।

➢ मैजारिटी हर एक सेवाधारी के मन में बाप का प्यार और सेवा का उमंग है। परन्तु एकाग्रता वा दृढ़ता के शक्ति की कमी है और और बातों में मन-बुद्धि बट जाता है। व्यर्थ संकल्प अपनी तरफ खींच लेते हैं, इसलिए इस व्यर्थ से मुक्त बनो।

➢ डायमण्ड जुबली वर्ष में सेवाओं के प्लैन भी बहुत फास्ट और अच्छे बनाये हैं। फास्ट प्लैन देख बापदादा खुश हैं लेकिन सेवा का बोझ ऐसा न हो जो कहो कि सेवा के कारण थोड़ा नीचे ऊपर हो गये। जो सेवा स्वयं को वा दूसरे को डिस्टर्ब करे वो सेवा नहीं, स्वार्थ है। इसलिए स्वार्थ से न्यारे और सर्व के सम्बन्ध में प्यारे बनकर सेवा करो, तब जो संकल्प किया है वा लक्ष्य रखा है कि डायमण्ड जुबली में डायमण्ड बन डायमण्ड जुबली मनायेंगे – वह पूरा हो सकेगा।

➢ इस वर्ष सदा यही लक्ष्य रखना कि डायमण्ड बनकर, डायमण्ड जुबली मनानी है क्योंकि आप डायमण्ड जुबली के वा डायमण्ड बनने के प्लैन बना रहे हो तो आप सबसे पहले माया भी अपना प्लैन बना रही है। इसलिए ये नहीं कहना – क्या करें, हिम्मत कम हो गई, माया बहुत तेज है .... मायाजीत जगतजीत बनने के लिए चारो ओर अटेन्शन प्लीज़।

➢ जैसे शुरु में कमाई का साधन कुछ नहीं था, ब्रह्मा बाप के साथ एक-दो समर्पण हुए और अखबार

में डाला ''ओमममण्डली रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड।'' तो अभी भी जब चारों ओर ये स्थूल हलचल होगी फिर अखबार वाले आपके पास आयेंगे और खुद ही डालेंगे, टी.वी. में दिखायेंगे कि ''ब्रह्माकुमारीज़ रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड।'' कुछ भी हो जाये, दिन में खाने की रोटी भी नहीं मिले तो भी आपके चेहरे चमकते रहेंगे।

➢ ब्राह्मण जो सच्चे हैं, श्रेष्ठ जीवन के लक्ष्य वाले हैं उनकी विशेषता है ही -प्रसन्नता। चाहे कोई गाली भी दे रहे हों तो भी आपके चेहरे पर दु:ख की लहर नहीं आनी चाहिये।

प्रसन्नचित्त। गाली देने वाला भी थक जाये, यह नहीं कि उसने एक घण्टा बोला, मैंने सिर्फ एक सेकण्ड बोला। शक्ल पर अप्रसन्नता आई तो फेल हो गये। इतना सहन किया.. फिर गुब्बारे से गैस निकल गई। तो गैस वाले गुब्बारे नहीं बनना।

➢ ''बाप मिला, सब कुछ मिला'' – यही गीत गाते रहो तो चेहरा नहीं बदलेगा। ऐसे नहीं उसके आगे जोर-जोर से हंसने लग जाओ, तो वो और ही गर्म हो जाये। प्रसन्नता अर्थात् आत्मिक मुस्कराहट, बाहर की नहीं। तो सदा अप्रसन्नता मुक्त और प्रसन्नता युक्त बनो।

31.12.95

➢ डायमण्ड वर्ष में बापदादा यही विशेषता देखना चाहते हैं कि हर बच्चा चमकता हुआ डायमण्ड ही दिखाई दे। तो यही संकल्प करो कि हम स्वयं भी डायमण्ड बनेंगे और डायमण्ड ही देखेंगे। चाहे वो दूसरी आत्मा एकदम तमोगुणी काला कोयला हो, लेकिन आप डायमण्ड ही देखना तो आपकी दृष्टि पड़ने से उसका भी कालापन कम होता जायेगा।

➢ इस वर्ष में बापदादा की विशेष सभी बच्चों के प्रति यही श्रेष्ठ श्रीमत वा शुभ आश है कि कुछ भी हो

जाये लेकिन किसी भी विघ्न अथवा स्वभाव के वश होकर दाग़ नहीं लगाना। विघ्न विनाशक बनना। प्रकृति के, आत्माओं के, अनेक प्रकार की परिस्थितियों के विघ्न तो आयेंगे लेकिन आप ऐसे पावरफुल रहना जो विघ्नों का प्रभाव नहीं पड़े।

➢ यह डायमण्ड जुबली वर्ष महान् वर्ष है। इस महान् वर्ष में बापदादा सभी को चलता-फिरता फरिश्ता देखना चाहते हैं। फरिश्ता माना लाइट का आकार। अगर आपको शरीर को ही देखने की आदत पड़ गई है तो कोई हर्जा नहीं, अभी लाइट का शरीर देखो।

➢ बापदादा से प्यार है तो प्यार का अर्थ है समान बनना। जैसे ब्रह्मा बाबा फरिश्ता रूप है ऐसे ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर हर कर्म करो।

➢ ब्रह्मा बाप के स्थापना के कार्य की जुबली मना रहे हो। तो ब्रह्मा बाप को डायमण्ड जुबली की दिलपसन्द गिफ्ट दो – बाप के दिल पसन्द गिफ्ट है चलता-फिरता फरिश्ता स्वरूप। तो फरिश्ता समान बन जाओ। फरिश्ते रूप में कोई भी विघ्न प्रभाव नहीं डालेगा। आपके संकल्प, वृत्ति, दृष्टि – सब डबल लाइट हो जायेंगे। फरिश्ते बनेंगे तो

जैसे हीरा चमकता है ऐसे आपका फरिश्ता रूप चमकेगा। ये अभ्यास अच्छी तरह से करते रहो।

➢ अमृतवेले उठते स्मृति में लाओ – मैं फरिश्ता हूँ। जो इस अभ्यास में फुल पास होंगे तो ब्रह्मा बाबा उन बच्चों को शाबास देने के साथ-साथ रोज़ अमृतवेले अपनी बाहों में समा लेगा। महसूसता होगी कि ब्रह्मा बाबा की बाहों में, अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हैं। बड़ी-बड़ी भाकी मिलेगी और जो फरिश्ता बनेगा उसके सामने अगर कोई भी परिस्थिति या कोई भी विघ्न आया तो बाप स्वयं छत्रछाया बन जायेंगे।

➢ बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं कि पुराने वर्ष को विदाई देने के साथ जो कमजोरी की पुरानी बातें दिल में सोची हैं उन्हें अच्छी तरह से सजाधजा कर विदाई दे दो। ऐसे नहीं सोचो कि छूटता ही नहीं है, क्या करें! वो नहीं छूटेगा, आप छोड़ो तो छूटेगा। दृढ़ संकल्प और सम्पूर्ण निश्चय से विदाई दे दो। निश्चय को हिलाओ नहीं।

➢ कई बच्चे सोचते हैं दो हज़ार तक ठीक हो जायेगा.... लेकिन दो हज़ार की डेट तो बाप ने दी नहीं है, तो ऐसे न हो कि आप दो हज़ार का इन्तज़ार करते रहो और नई

दुनिया का इन्तज़ाम पहले से हो जाये। इसलिये अलबेले मत बनना।

➢ बार-बार रिवाइज़ करो। काम में मन-बुद्धि सहित इतना बिजी न हो जाये जो आत्मा की स्मृति मर्ज हो जाए और एक्शन कानसेस हो जाओ। अपने चार्ट में दो बातें चेक करो – एक गँवाया तो नहीं, दूसरा जमा कितना किया? कम से कम इतना जमा करो जो 21 जन्म रॉयल फैमिली में प्रालब्ध भोगते रहो।

➢ अलबेलेपन का पश्चाताप् बहुत-बहुत-बहुत बड़ा है। जो बच्चे अलबेले बनकर औरों को नीचे जाने में फॉलो

करते हैं उन पर बापदादा को बहुत रहम आता है कि पश्चाताप् की घड़ियाँ कितनी कठिन होंगी। इसलिए अलबेलेपन की लहर को, दूसरों को देखने की लहर को इस पुराने वर्ष में मन से विदाई दो। बापदादा ने जो मुक्त होने की बातें सुनाई हैं, उसके ऊपर बहुत अटेन्शन दो।

➢ पुरानों में जो पहले-पहले का जोश, उमंग था वह नहीं है। पढ़ाई में भी अलबेले हैं। सब सुन लिया, समझ लिया .... लेकिन सोचो, अगर समझ लिया, सब सुन लिया

तो बापदादा पढ़ाई पूरी कर देते ..... तो इस अलबेलेपन को अच्छी तरह से विदाई दो। औरों को नहीं देखो, ब्रह्मा बाप को देखो। अगर कोई ठोकर खाता है तो महारथी का काम है ठोकर से बचाना,न कि खुद फॉलो करना।

➢ सदा बाप के साथ रहो, अकेले नहीं। जब बाप स्वयं ऑफर करता है कि मैं बच्चों का साथी हूँ, तो साथ रहो। यह भगवान की ऑफर सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगी।

➢ आप एक-एक रत्न ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार हो। सदैव समझो कि हम ब्राह्मण परिवार के ताज के

हीरे हैं। ताज से एक भी हीरा गिर जाये तो अच्छा नहीं लगता इसलिए इतना अपना महत्व समझो। साधारण नहीं महान् हो।

➢ इस वर्ष का विशेष लक्ष्य है कि डबल लाइट फरिश्ते स्वरूप में रहना और सच्चा, बेदाग़, अमूल्य डायमण्ड बनकर अनेक आत्माओं को डायमण्ड बनाना। ये डायमण्ड जुबली वर्ष अनेक आत्माओं को, बाप के समीप आने का वर्ष है। और साथ-साथ यह वर्ष सहज बाप के साथ रहने से सहज ही प्राप्ति का वर्ष है इसलिए इस सहज वरदान का पूरा-पूरा लाभ लो।

9.1.96

➢ बालक सो मालिक हूँ–इस स्मृति से खुशी, शक्ति और वे सर्व बेहद वे खजानों का अनुभव करो। चेक करो कि स्व की सर्व कर्मेन्द्रियाँ, कर्मचारी ऑर्डर प्रमाण चलते हैं? कभी कर्मचारी मालिक तो नहीं बन जाते?

➢ इस मालिकपन को भुलाने वाला वा समय प्रति समय राजा को अपने वश में करने वाला है मन। पहले मन को कन्ट्रोल करो। राजा का अर्थ है रूलिंग पॉवर वाले। तो चेक करो कि रूलिंग पॉवर कितने परसेन्टेज में आई है?

➢ ऐसे कभी भी बड़ों को वा अपने दिल को दिलासा नहीं दो कि आज नहीं तो कल ठीक हो जायेंगे। ये दिलासा नहीं, धोखा है। ऐसे भी नहीं कहो कि क्या करें – ये मेरा स्वभाव है, मेरा संस्कार है। ये 'मेरा' शब्द ही पुरुषार्थ में ढीला करता है। यह रावण की चीज़ अन्दर छिपाकर रख दी है इसलिए अशुद्ध और शुद्ध दोनों की युद्ध चलती रहती है और आप बार-बार ब्राह्मण से क्षत्रिय बन जाते हो।

➢ जैसे बाप के संस्कार हैं – विश्व कल्याणकारी, शुभ चिन्तनधारी, सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामनाधारी।

यही आपके ओरिज़नल संस्कार हों। लेकिन अगर अशुद्धि अन्दर छिपी हुई है तो वो सम्पूर्ण शुद्ध बनने में विघ्न डालती है। इसलिए जो बनना चाहते हो, लक्ष्य रखते हो उसमें फर्क पड़ जाता है।

➢ दुनिया वाले कहते हैं मन एक घोड़ा है जो बहुत तेज भागता है लेकिन आपके पास श्रीमत की मजबूत लगाम है। श्रीमत का लगाम सदा अपने अन्दर स्मृति में रखो। जब भी कोई बात हो, मन चंचल हो तो श्रीमत का लगाम टाइट करो। फिर मंज़िल पर पहुँच जायेंगे। लेकिन पहले मन का राजा बनो।

➢ रोज़ चेक करो, समाचार पूछो–हे मन मन्त्री तुमने क्या किया? कहाँ धोखा तो नहीं दिया? ब्रह्मा बाप आदि में रोज़ ये दरबार लगाते थे। मेहनत की है, अटेन्शन रखा है तब स्वराज्य अधिकारी सो विश्व वे राज्य अधिकारी बने हैं।

➢ जब कोई भी विकराल रूप की माया आवे तो सदा साक्षी होकर खेल करो। जैसे वो कुश्ती का खेल होता है ऐसे यही समझो कि ये कुश्ती का खेल, खेल रहे हैं। अच्छी तरह से मारो, घबराओ नहीं क्योंकि अभी माया में कुछ भी ताकत नहीं है।

सिर्फ बाहर से शेर का रूप है लेकिन बिल्ली भी नहीं है। इसलिए यह कभी नहीं कहो – क्या करूँ, कैसे होगा, क्या होगा.., लेकिन जो हो रहा है वो अच्छा और जो होने वाला है वो और अच्छा होगा। ब्राह्मण बनना अर्थात् अच्छा ही अच्छा है।

➢ जब भी कोई परिस्थिति आती है तो घबराने के बजाए उस परिस्थिति को अपना थोड़े समय के लिये शिक्षक समझो क्योंकि परिस्थितियां दो शक्तियों के अनुभवी बनाती हैं – एक - सहनशक्ति, न्यारापन, नष्टोमोहा और दूसरा - सामना करने की शक्ति।

18.1.96

➢ ब्रह्मा बाप के समान-स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा बनो क्योंकि सर्व कार्य करने की समर्थियां अर्थात् शक्तियां साकार रूप में ब्रह्मा बाप ने बच्चों को अर्पण कर दी हैं। जैसे ब्रह्मा बाप स्नेही बच्चों को सामने देखते भी न्यारे और प्यारे रहे, कोई मेरापन नहीं रहा, देहभान से भी नष्टोमोहा रहे - ऐसे फॉलो फादर करो।

➢ जब आप सब कहते हो कि हम ट्रस्टी हैं। ट्रस्टी माना सब कुछ बाप के हवाले। कभी ट्रस्टी, कभी गृहस्थी नहीं बनो। क्योंकि सब अच्छा है और अच्छा होना ही है, निश्चित है -

इसको कहा जाता है समर्थ स्वरूप।

➢ सदा समर्थ रहने के लिए सिर्फ दो शब्द याद रखो और प्रैक्टिकल में करते चलो -- 1- शुभ चिन्तन, 2- शुभचिन्तक। शुभचिन्तन अर्थात निगेटिव को भी पॉजेटिव करो। सभी के प्रति शुभचिन्तक ।

➢ कभी भी कोई शारीरिक बीमारी हो, मन का तूफान हो, तन में, प्रवृत्ति में, सेवा में हलचल हो, किसी भी प्रकार की हलचल में दिलशिकस्त कभी नहीं होना। बाप समान बड़ी दिल वाले बनो क्योंकि दिलशिकस्त होना दवाई नहीं है। दिलशिकस्त से

बीमारी को बढ़ा देते हो। इसलिए हिम्मत वाले बनो तो बाप भी मददगार बनेंगे।

➢ मन में अगर कोई उलझन आ भी जाती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति धारण करो और निर्णय शक्ति तब आ सकती है जब आपका मन बाप के तरफ होगा। तो मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो।

➢ धन भी नीचे-ऊपर होना ही है क्योंकि सब कुछ अति में जाना है। लेकिन जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं उन्हें कैसी भी हालत में दाल रोटी जरूर मिलेगी। सच्ची दिल पर साहेब

राज़ी है सिर्फ अलबेले या आलस्य के वश होकर ऐसे थक कर बैठ नहीं जाना।

➢ परिवार में भी खिटखिट होनी ही है, उसे ट्रस्टी बन, साक्षी बन बाप से शक्ति लेकर हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गड़बड़ होगी। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं। जब मेरापन आता है तो सब बातें आती हैं, जहाँ भी मेरा आया वहाँ बुद्धि का फेरा हो जाता है। अगर बुद्धि कहाँ भी उलझन में बदलती है तो समझ लो ये मेरापन है। अभी समर्थ बनो और सन शोज़ फादर का पाठ पक्का करो।

➢ रोज़ बापदादा बच्चों को अमृतवेले वरदान देते हैं तो सदा अपना वरदानी स्वरूप ही देखो। माया वरदान भुला न दे। माया तो लास्ट घड़ी तक आयेगी। लेकिन माया का काम है आना और आपका काम है दूर से भगाना। साइलेन्स के साधनों से आप दूर से ही पहचानकर भगा दो, टाइम वेस्ट नहीं करो।

➢ जब भी कोई परिस्थिति आती है तो क्यों, क्या, कैसे, कभी-कभी तो होता ही है, अभी कौन पास हुआ है, सभी में कमजोरी है – ऐसे कमजोर संकल्प करके माया की

खातिरी नहीं करो लेकिन त्रिकाल-दर्शी की सीट पर सेट होकर हर समय, हर कर्म करो। त्रिकालदर्शी अर्थात् पास्ट, प्रेजेन्ट और फ्यूचर को जानने वाले बनो तो क्यों, क्या नहीं करना पड़ेगा। त्रिकालदर्शी होने के कारण पहले से ही जान लेंगे कि ये बातें तो आनी हैं, होनी हैं। लेकिन स्व-स्थिति शक्तिशाली है तो पर-स्थिति उसके आगे कुछ भी नहीं है।

➢ कोई भी कार्य पहले सोचो फिर करो। करके फिर सोचना अर्थात् पश्चाताप् का रूप और पहले सोचना ये ज्ञानी तू आत्मा का गुण है। ऐसा अपने को बनाओ जो मन में एक

सेकण्ड भी पश्चाताप् नहीं हो।

➢ इस डायमण्ड जुबली में विशेष सारे दिन में एक समय और दूसरा संकल्प–इन दो खजानों पर अटेन्शन देकर जमा करो क्योंकि पूरे कल्प के लिये जमा करने की बैंक अभी ही खुलती है। सतयुग में ये जमा करने की बैंक बन्द हो जायेगी।

➢ डायमण्ड जुबली में सच्चे डायमण्ड बनना ही है चाहे क्या भी हो, त्याग करना पड़े, तपस्या करनी पड़े, निर्मान बनना पड़े, कुछ भी हो जाये, बनना जरूर है। इसके लिए पहला-पहला त्याग ये 'मैं' शब्द

है। ये 'मैं' शब्द समाप्त हो भाषा में भी 'बाबा-बाबा' शब्द आ जाये। जब भी मैं शब्द का प्रयोग करते हो तो देही अभिमानी बनकर यूज करो। तो आत्मा को बाप स्वत: याद रहेगा।

➢ बापदादा द्वारा सभी बच्चों को एक जैसा वरदान मिला हुआ है, खजाने भी सभी को एक जैसे मिले हैं। पालना भी सबको एक जैसी मिल रही है, दिनचर्या, मर्यादा सबके लिए एक जैसी है। जब सब एक है फिर किसको सफलता अधिक मिलती है, किसको कम मिलती है इसका कारण है कि चलते-चलते –

1- बॉडी-कॉन्सेस वाला 'मैं-पन' आ जाता है।

2- कभी-कभी जो साथी हैं उन्हों की सफलता को देखकर ईर्ष्या आ जाती है।

3- जो दिल से सेवा करनी चाहिये, वो दिमाग से करते हैं। दिमाग वाले को थोड़ा समय बाबा याद रहता लेकिन फिर वो ही मैं-पन आ जाता है। इसलिए दिमाग और दिल दोनों का बैलेन्स रखो।

➢ डायमण्ड जुबली में विशेष बचत का खाता जमा करो। ऐसे नहीं, कि सारा दिन मेरे से कोई ऐसी बात

नहीं हुई, किसको दु:ख नहीं दिया, किसी से कुछ खिटखिट नहीं हुई..। सेवा में समय लगाया–यह तो अच्छी बात है लेकिन सेवा में यदि 8 घण्टा समय लगाया तो 8 ही घण्टे सेवा के जमा हुए? या आधा जमा हुआ, आधा भागदौड़ में, सोचने में गया?

➢ श्रेष्ठ संकल्प, शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प जमा होते हैं। तो सारे दिन में जमा का खाता नोट करो। जब जमा का खाता बढ़ता जायेगा तो स्वत: ही डायमण्ड बन जायेंगे। समय को, संकल्प को बचाओ, जितना अभी बचत करेंगे, जमा करेंगे तो सारा कल्प उसी

प्रमाण राज्य भी करेंगे और पूज्य भी बनेंगे। तो नोट करो व्यर्थ वा साधारण समय कितना होता है? साधारण संकल्प कितने होते हैं?

➢ कभी जमा वेः खाते को कम देखकरवेः दिलशिकस्त नहीं होना। और ही अटेन्शन रखकर अपने आपसे रेस करना कि आज अगर 8 घण्टे जमा हुए तो कल 10 घण्टे हों क्योंकि अभी फिर भी जमा करने का समय है। अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। इसलिए और ही उमंग-उत्साह में आकरवेः दृढ़ संकल्प करो कि मुझे अपने जमा का खाता बढ़ाना ही है।

➢ इस डायमण्ड जुबली में याद से, सेवा से, शुभ भावना, शुभ कामना से खाता जमा करो। दिलशिकस्त नहीं बनो, चेक करो और चेंज करो। जब बाप साथ है तो बाप को यूज़ करो। जब सर्वशक्तिमान् साथ है तो सफलता तो आपके चरणों में दौड़नी ही है।

➢ सत्यता की शक्ति को धारण करने के लिए सम्पूर्ण पवित्र बनो। क्योंकि पवित्रता ही सत्यता है। लेकिन सत्यता की शक्ति तब आयेगी जब अपने और बाप के सत्य स्वरूप की स्मृति रहेगी फिर संकल्प भी व्यर्थ नहीं हो सकता। व्यर्थ को सत्य नहीं कह सकते। सत्यता की परख है कि संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता अनुभव हो।

➢ सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। अगर अपने सत्य को जिद्द से सिद्ध करते हैं तो उसमें दिव्यता नहीं दिखाई देती है,

साधारणता है। सत्य की निशानी – सच तो बिठो नच। वो सदा खुशी में नाचता रहेगा। सत्यता का अर्थ ही है सत्य स्वरूप में स्थित होकर संकल्प, बोल और कर्म करना।

➢ दुनिया वाले कहते हैं कि आजकल सच्चे लोगों का चलना ही मुश्किल है, झूठ बोलना ही पड़ेगा। ब्राह्मण आत्मायें भी सोचती हैं कि कहाँ-कहाँ चतुराई से तो चलना ही पड़ता है। लेकिन ब्रह्मा बाप की सत्यता व पवित्रता के लिए कितनी आपोजीशन हुई, लोगों ने कितना राय दी कि आप सीधा ऐसे नहीं कहो कि पवित्र रहना ही है, यह

कहो कि थोड़ा-थोड़ा रहो। लेकिन ब्रह्मा बाप न तो घबराये और न चालाकी से चले तो फॉलो फादर करो।

➢ सत्यता की शक्ति धारण करने में सहनशक्ति की आवश्यकता है। सहन करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, हार माननी पड़ती है, लेकिन वह हार, हार नहीं सदा की विजय है।

➢ जो परिस्थिति को देखकर सत्यता से ज़रा भी किनारा कर लेते, कहते हैं, और कुछ नहीं किया एक दो शब्द ऐसे बाहर से थोड़ा बोल दिये

तो यह सम्पूर्ण सत्यता नहीं है। सत्यता के पीछे अगर सहन भी करना पड़ता तो वह सहन शक्ति के रूप में जमा होता है। जो थोड़ा भी सहन करने में कमजोर हो जाते हैं उन्हें असत्य का सहारा लेना पड़ता है, वो बाहर से ऐसे समझेंगे कि हम बहुत अच्छे चलते हैं, हमको चलने की चतुराई आ गई है, लेकिन उनके जमा का खाता बहुत कम होगा। इसलिए चतुराई से नहीं चलो।

➢ कई बच्चे एक दो को देखकर कॉपी करते हैं, समझते हैं यह ऐसे चलते हैं तो इसका नाम बहुत अच्छा

हो गया है, यह बहुत आगे हो गये हैं और हम सच्चे चलते हैं तो पीछे के पीछे ही रह गये। लेकिन वह पीछे रहना नहीं, आगे बढ़ना है। बाप के दिल में आगे बढ़ना अर्थात् सारे कल्प के प्रालब्ध में आगे बढ़ना।

➢ डायमण्ड बनना है तो चेक करो कि ज़रा भी रॉयल रूप का दाग डायमण्ड में छिपा हुआ तो नहीं है! सत्यता की शक्ति से दिव्यता को धारण करो। कुछ भी सहन करना पड़े, घबराओ नहीं। निर्भय बनो, सत्य समय प्रमाण स्वयं सिद्ध होगा। यदि कहाँ भी सामना करना पड़ता है तो ब्रह्मा बाप के जीवन को आगे

रखो। ब्रह्मा बाप के आगे भी वैराइटी संस्कार वाली आत्मायें रही, लेकिन इतनी सब परिस्थितियां होते हुए सत्यता की स्व-स्थिति ने सम्पूर्ण बना दिया। तो सहनशक्ति धारण कर असत्य का सामना करो।

➢ साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो करो और अशरीरी बनने में निराकार बाप को फॉलो करो। किसी के भी प्रभाव में नहीं आ जाओ। ऐसे नहीं सोचो हमने महारथियों में भी ऐसे देखा ना लेकिन अगर महारथी भी कुछ मिक्स करता है तो उस समय महारथी नहीं है। उस समय उस पर ग्रहचारी है।

➢ तीन बातें याद रखो–पवित्रता, सत्यता और दिव्यता। ऐसे साधारण बोल नहीं, साधारण संकल्प नहीं, साधारण कर्म नहीं। दिव्यता का अर्थ है – दिव्य गुण के आधार पर मन-वचन और कर्म करना।

➢ सेकण्ड में अशरीरी, न्यारे और बाप के प्यारे बनने की ड्रिल बीच-बीच में करते रहो। चाहे एक मिनट करो, आधा मिनट करो...यह अभ्यास करने से लास्ट समय अशरीरी बनने में बहुत मदद मिलेगी। जब चाहे अशरीरी बनो, जब चाहे शरीर में आओ। काम है तो शरीर का आधार लो लेकिन कराने वाली

मैं आत्मा अलग हूँ – यह प्रैक्टिस करो तो कभी भी बॉडी कॉन्सेस की बातों में नीचे-ऊपर नहीं होंगे।

➢ कुछ भी सेवा करो जिज्ञासु आयें या नहीं आये लेकिन स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट रहो। उदास नहीं बनो। स्टूडेन्ट नहीं बढ़े, कोई हर्जा नहीं आपने तो किया ना। आपके हिसाब-किताब में जमा हो गया और उन्हों को भी सन्देश मिल गया। टाइम पर सभी को आना ही है, इसलिए करते जाओ। खर्चा बहुत हुआ –ये नहीं सोचो। अगर स्वयं सन्तुष्ट हो तो खर्चा सफल हुआ।

➢ सेवा की गति और स्व पुरूषार्थ की गति – इन दोनों के बैलेन्स से ही आत्माओं को वा प्रवृत्ति को ब्लैसिंग मिलेगी। जैसे आपने बैलेन्स से ब्लैसिंग ली है ऐसे औरों को भी देनी है।

➢ सेवा और स्व पुरूषार्थ इन दोनों का बैलेन्स रखने के लिए विशेष याद रखो कि बाप 'करावनहार' है और मैं आत्मा, 'करनहार' हूँ। 'करन-करावनहार', यह एक शब्द बैलेन्स बहुत सहज बनायेगा। जब स्वयं को 'करनहार' समझेंगे तो कराने वाला अवश्य याद आयेगा। डबल रूप से

'करावनहार' की स्मृति रहे – एक बाप 'करावनहार' है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली करावनहार हूँ। इससे कर्म करते कर्म के अच्छे या बुरे प्रभाव में नहीं आयेंगे। इसको कहते हैं–कर्मातीत अवस्था।

➢ बाप से प्यार की निशानी है–कर्मातीत बनना। इसके लिए 'करावनहार' होकर कर्म करो और कराओ। कर्मेन्द्रियां आपसे नहीं करावें लेकिन आप कर्मेन्द्रियों से कराओ। 'करावनहार' आत्मा हूँ, मालिक हूँ, विशेष आत्मा, मास्टर

सर्वशक्तिमान् आत्मा हूँ - इस स्मृति से कर्म करो।

➢ सेवा वा कर्म तो करना ही है। तपस्या में बैठना यह भी कर्म है। बिना सेवा के तो रह नहीं सकते हो क्योंकि समय कम है और सेवा अभी भी बहुत है। इसलिए सेवा और स्व पुरूषार्थ दोनों का बैलेन्स रखो। ऐसे नहीं कि सेवा में बहुत बिजी थे इसलिए स्व पुरूषार्थ कम हो गया। नहीं। और ही सेवा में स्व पुरूषार्थ का अटेन्शन ज्यादा चाहिए।

➢ सेवा में माया को आने की मार्जिन बहुत प्रकार से होती है। कई

बार नाम सेवा होता लेकिन होता है स्वार्थ। सेवा में ही स्वभाव, संबंध का विस्तार होता है इसलिए यदि थोड़ा सा बैलेन्स कम हुआ तो माया नये-नये रूप में, नई-नई परिस्थिति के रूप में, सम्पर्क के रूप में आ जायेगी इसलिए बैलेन्स कभी कम नहीं होने दो।

➢ दिनप्रतिदिन सेवा बढ़नी ही है। न चाहते भी सेवा के बंधन में बंधे हुए हो लेकिन बैलेन्स से सेवा का बंधन, बंधन नहीं स्वीट संबंध होगा। इसलिए सेवा के अति में नहीं जाओ, बैलेन्स रखो। कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ। तो जिम्मेवारी

होते भी थकावट कम होगी।

➢ कई बच्चे कहते हैं – बहुत सेवा की है, थक गये हैं, माथा भारी हो गया है। लेकिन 'करावनहार' की स्मृति रहे तो बाप बहुत अच्छा मसाज़ करेगा। माथा और ही फ्रेश हो जायेगा। थकावट नहीं होगी, इनर्जी एकस्ट्रा आयेगी।

➢ अभी प्रवृत्ति भी बहुत थक गई है, आत्मायें निराश हो गई हैं। निराश आत्माओं की पुकार सुनो। मर्सीफुल बनो। सब धर्म वाले मर्सी जरूर मांगते हैं। तो अपने भाई बहिनों के ऊपर रहमदिल बनो, रहमदिल

बन सेवा करेंगे तो उसमें निमित्त भाव स्वत: ही होगा।

➢ सच्चे रहम में आत्मा-आत्मा पर रहम करती है कोई भी लगाव, देह अभिमान नहीं वा देह के किसी भी आकर्षण का नाम-निशान नहीं होता। तो चेक करो–नि:स्वार्थ रहम है? लगावमुक्त रहम है? कोई अल्पकाल की प्राप्ति के कारण तो रहम नहीं है? अगर कर्मातीत बनना है तो इन रुकावटों को समाप्त करो। अच्छाई भले धारण करो लेकिन अच्छाई में प्रभावित नहीं हो जाओ। न्यारे और बाप के प्यारे। जो बाप के प्यारे हैं वह सदा सेफ हैं।

➢ बाप चाहे तो जादू की लकड़ी घुमाकर स्थापना वा विनाश भी कर ले, लेकिन राज्य आपको करना है। इसलिए कर्मातीत भी आपको बनना है। आप साथियों के बिगर बाप का भी काम नहीं चल सकता। यह बना बनाया स्वीट ड्रामा है, इसे रिपीट होना है, बदल नहीं सकता। फिर भी ड्रामा में इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म को बहुत ही पावर्स मिली हुई हैं। बाप ने विल किया है इसीलिए विल पॉवर है।

➢ आप ब्राह्मणों के लिए गायन है कि 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु इस ब्राह्मण जीवन में।' तो जिसे सर्व प्राप्तियाँ हैं उसके चेहरे और चलन में सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी दिखाई देगी, उन्हें कभी भी किसी भी बात में क्वेश्चन (प्रश्न) नहीं होगा। यह क्यों, यह क्या...यही हलचल है। जो सम्पन्न होता है उसमें हलचल नहीं होती है। तो अपने आपसे पूछो कि मैं सदा प्रसन्नचित्त रहता हूँ?

➢ प्रसन्नता अगर कम होती है तो उसका कारण प्राप्ति कम और प्राप्ति कम होने का कारण है कोई न कोई

इच्छा। इच्छा का फाउण्डेशन ईर्ष्या और अप्राप्ति है। बहुत सूक्ष्म इच्छायें अप्राप्ति के तरफ खींच लेती हैं, फिर रॉयल रूप में यही कहते हैं कि मेरी इच्छा नहीं है, लेकिन हो जाए तो अच्छा है। इसलिए चेक करो कि ज्ञान के जीवन में, रॉयल इच्छायें सूक्ष्म रूप में रही हुई तो नहीं हैं?

➢ यदि बाप से बहुत प्यार है और सदा का राज्य भाग्य प्राप्त करना है तो सदा प्रसन्नचित्त रहो और कोई भी भाव चेहरे वा चलन में दिखाई नहीं दे। जो प्रशंसा के आधार पर प्रसन्नता अनुभव करते हैं उनकी वह प्रसन्नता अल्पकाल की होती है। तो

यह भी चेक करो कि मेरी प्रसन्नता प्रशंसा के आधार पर तो नहीं है?

➢ रॉयल रूप की इच्छा का स्वरूप नाम, मान और शान है। जो नाम के पीछे सेवा करते हैं, उनका अल्पकाल के लिए नाम तो हो जाता है लेकिन ऊंच पद में नाम पीछे हो जाता है क्योंकि कच्चा फल खा लिया। यदि सोचते हो कि मैंने सेवा की तो मुझे मान मिलना चाहिए – यह मान नहीं लेकिन अभिमान है। जहाँ अभिमान है वहाँ प्रसन्नता रह नहीं सकती यदि शान चाहिए तो सदा बापदादा के दिल में अपना शान प्राप्त करो, आत्माओं द्वारा शान प्राप्त

करने की इच्छा नहीं रखो।

➢ किसी भी परिस्थिति में प्रसन्नता की मूड परिवर्तन होती है तो सदाकाल की प्रसन्नता नहीं कहेंगे। ब्राह्मण जीवन की मूड सदा चियरफुल और केयरफुल हो। मूड बदलनी नहीं चाहिए। कारण कुछ भी हो, लेकिन आप कारण को निवारण करो, सेवा वा परिवार से किनारा नहीं करो क्योंकि जब प्रकृति की मूड को भी चेंज करने का कान्ट्रैक्ट लिया है तो प्रकृति को परिवर्तन करने वाले क्या अपने मूड को परिवर्तन नहीं कर सकते?

➢ मूड ऑफ होना तो बड़ी बात है, लेकिन मूड परिवर्तन होना – यह भी ठीक नहीं। मूड ऑफ वाले तो भिन्न-भिन्न प्रकार के खेल दिखाते हैं। अब ऐसा खेल नहीं करो।

➢ अभी डायमण्ड जुबली मना रहे हो, 60 साल के बाद वैसे भी वानप्रस्थ शुरू होता है। तो अभी छोटे बच्चे नहीं हो, अभी वानप्रस्थ अर्थात् सब कुछ जानने वाले, अनुभवी आत्मायें हो, नॉलेजफुल हो, पॉवरफुल हो, सक्सेसफुल हो। इसलिए नाज़ नखरे नहीं करो, समान बनकर दिखाओ।

➢ नॉलेजफुल तो हो लेकिन यदि

सक्सेसफुल नहीं बनते तो उसका कारण है – एक तो पहले से कोई न कोई कमजोर संकल्प कर लेते हो – पता नहीं होगा या नहीं! यह संकल्प दीवार बन जाती है और सफलता उस दीवार के अन्दर छिप जाती है। इसलिए पहले से कमजोर संकल्प नहीं करो।

➢ ''निश्चयबुद्धि विजयी हैं ही'' – इस स्लोगन की स्मृति से कमजोर जाल को सेकण्ड में समाप्त करो। अगर एक बार भी इस जाल में फँस गये तो निकलना बहुत मुश्किल है। विजय वा सफलता मेरा परमात्म बर्थराइट है, इसको कोई छीन नहीं सकता–इस निश्चय के आधार से सदा

प्रसन्नचित्त रहो।

➢ सदा सफलता को प्राप्त करने के लिए – समय, संकल्प, सम्पत्ति सब सफल करो। सफल करना ही सफलता का आधार है। अगर सफलता नहीं मिलती है तो जरूर कोई न कोई खजाने को सफल नहीं किया है। तो चेक करो कि कौन सा खजाना सफल नहीं किया, व्यर्थ गँवाया? सफल करो और सफलता पाओ–यह वर्सा भी है तो वरदान भी है।

➢ सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रहो। प्रसन्नचित्त रहने से बहुत अच्छे अनुभव करेंगे। वैसे भी प्रसन्नचित्त

वे संग में रहना, उसवे साथ बात करना, बैठना अच्छा लगता है और कोई प्रश्नचित्त वाला आ जाए तो तंग हो जायेंगे। तो यह लक्ष्य रखो कि सदा प्रसन्नचित्त रहना है। आज प्रश्नचित्त को स्वाहा करो। इससे आपका भी टाइम बचेगा और दूसरों का भी टाइम बचेगा। तो बचत का खाता जमा करो। फिर 21 जन्म आराम से खाओ, पियो, मौज करो। वहाँ जमा नहीं करना पड़ेगा।

➢ प्रश्नचित्त बनना अर्थात् परेशान होना और परेशान करना। इसलिए प्रश्न करने वे बजाए अपने निश्चय और जन्म सिद्ध अधिकार की शान

में रहो तो परेशान नहीं होंगे।

➢ जैसे अब तक हिम्मत रख बाप के साथ और हाथ के आधार पर मजबूत रहे हो, ऐसे सदा ही हिम्मत को साथी बनाकर रखना, हिम्मत को नहीं छोड़ना। जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप साथ है ही।

➢ विशेष समय निकालकर अपनी कमजोरी को भरने के लिए तपस्या करो। सम्पन्न बनना और बनाना है तो सोने का, खाने का, खाना बनाने के समय को शार्ट कर तपस्या करो। टाइम निकालो। ऐसे नहीं कि मैं तो बहुत बिजी हूँ, टाइम नहीं है। टाइम

मिलना नहीं है, टाइम निकालना है। सेवा करो लेकिन एक घण्टे वे बजाए अगर पौटे घण्टे में आप पॉवरफुल होकर करो तो दो घण्टे का फल मिलेगा, समय को बचाओ। सेवाकेन्द्र कल्याणी नहीं, विश्व कल्याणी बनो।

➢ जितना अन्तर्मुखता वे कमरे में बैठ रिसर्च करेंगे उतना अच्छे से अच्छी टचिंग होंगी और इसी टचिंग से अनेक आत्माओं को लाभ मिलेगा। तो प्रयोग और योग दोनों का बैलेन्स रखते आगे बढ़ते चलो। जितना मनन करो उतना ही मक्खन निकलता है।

ड स्वयं में शक्ति रखो, स्नेह रखो, ईश्वरीय आकर्षण अपने में भरो जो सभी आपके साथी बन जायें। कोई न कोई विधि निकाल कर तपस्या करो। इसके जिम्मेवार स्वयं आप हो।

➢ जिस समय थकावट फील हो तो कहाँ भी जाकर डांस शुरू कर दो। चाहे बाथरूम में ही करो। इससे मूड चेंज हो जायेगी। मन की खुशी में नाचो, अगर वह नहीं कर सकते हो तो स्थूल में गीत बजाओ और नाचो।

➢ अभी डायमण्ड जुबली तो है ही।

लेकिन इस बारी बापदादा नम्बर देंगे कि रीयल में डायमण्ड कितने बनें? देखेंगे विदेश जीतता है या देश? युवा ज्यादा नम्बर लेते हैं, प्रवृत्ति वाले लेते हैं वा युवा कुमारियाँ लेती है? इसमें साथियों का भी सर्टीफिकेट चाहिए। ऐसे नहीं अपने आप सिर्फ कहो – मैं तो ठीक हूँ। नहीं, सर्टीफिकेट चाहिये। देखेंगे कितने निकलते हैं? वृद्धि तो होनी ही है।

3496

➢ ब्राह्मण जीवन का श्वास खुशी है। खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। इसलिए बापदादा कहते भल शरीर चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। तो सदाकाल की खुशी में रहो यदि कभी-कभी खुशी में रहते तो धर्मराजपुरी पास करनी पड़ेगी और पास विद आनर वाले बाप के साथ एक सेकण्ड में जायेंगे, रुकेंगे नहीं।

➢ डायमण्ड जुबली के वर्ष में हर एक बच्चे के प्रति बापदादा की एक शुभ आशा है कि जैसे इस समय विशेष सेवा का उमंग-उत्साह है, ऐसे समय की आवश्यकता वा समीपता प्रमाण स्व-स्थिति में बेहद

की वैराग्य वृत्ति चाहिए क्योंकि जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है, तो आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती। यदि समय प्रमाण वा सरकमस्टांश प्रमाण वैराग्य आता है तो समय नम्बरवन हो गया और आप नम्बर दो हो गये। इसलिए अभी बेहद का वैराग्य चाहिए।

➢ वैराग्य खण्डित होने का मुख्य कारण है देह-भान। जब तक देह-भान का वैराग्य नहीं है तब तक कोई भी अल्पकाल का वैराग्य सदाकाल नहीं हो सकता है। तो देह-भान के भिन्न-भिन्न रूपों को जानकर

बेहद के वैराग्य में रहो, देह-भान, देही-अभिमान में बदल जाए।

➢ क्योंकि जब तक किसी भी रूप में देह-भान है तो वैराग्य वृत्ति नहीं हो सकती। इसलिए पहले देह के पुराने संस्कारों से वैराग्य चाहिए। संस्कारों के कारण सेवा में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में विघ्न पड़ते हैं। संस्कार ही भिन्न-भिन्न रूप से अपने तरफ आकर्षित कर लेते हैं। जहाँ किसी भी तरफ आकर्षण है वहाँ वैराग्य नहीं हो सकता। तो चेक करो कि मैं अपने पुराने वा व्यर्थ संस्कार से मुक्त हूँ?

➢ अभी तक संस्कारों से वैराग्य वृत्ति में कमजोरी है। नालेजफुल बनकर किसी भी प्रकार के प्रबल संस्कार हों, सम्बन्ध हो, पदार्थ हो, उन पर विजयी बनो।

➢ डायमण्ड जुबली का अर्थ है डायमण्ड बनना अर्थात् बेहद के वैरागी बनना। सेवा का उमंग जितना है उतना वैराग्यवृत्ति पर अटेन्शन दो। इसी में अलबेलापन है। समय पर ठीक कर लेंगे–ऐसे दिलासा नहीं दो, समय को शिक्षक बनाना – यह आप मास्टर रचयिता के लिए शोभता नहीं।

➢ आगे चलकर साधन तो बहुत मिलेंगे, प्रकृति दासी होगी, सत्कार मिलेगा, स्वमान मिलेगा। लेकिन सब कुछ होते वैराग्य वृत्ति कम नहीं हो। यूज़ करते हुए इन्हों के प्रभाव में नहीं आओ। कमल पुष्प समान बनो।

➢ सेकण्ड में अशरीरी बनने का फाउण्डेशन भी बेहद की वैराग्य वृत्ति है। जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसा चाहिए वहाँ स्थिति को सेकण्ड में सेट कर सकेंगे। संकल्प किया व्यर्थ समाप्त, तो सेकण्ड में समाप्त हो जाए। युद्ध न चले।

डायमण्ड जुबली वर्ष में ईश्वरीय सेवाओं के लिए दिशा निर्देश

युवकों का आह्वान

➢ 4-5 सौ युवकों का ऐसा ग्रुप तैयार हो जिसे गवर्मेन्ट के इन बड़े लोगों से मिलाया जाए कि देखो कि ये इतने यूथ विश्व की तथा भारत की सेवा के लिए डिस्ट्रक्शन का काम न कर, कन्स्ट्रक्शन का काम कर रहे हैं। ऐसा दिव्यगुणों की धारणा वाला ग्रुप निकले, जिसका प्रभाव पहले घर वालों पर पड़े फिर इस हलचल वाली गवर्मेन्ट के आगे एक प्रैक्टिकल

मिसाल दिखा सकेंगे।

➢ डायमण्ड जुबली में युवक (कुमार) कम से कम आठ मोतियों का एक-एक कंगन तैयार करे। एक-एक कुमार आठ को भी लावे तो प्रजा बन जायेगी और प्रजा तैयार हो गई तो आपको राजतिलक जरूर मिलेगा। यदि कुमारों ने एक भी वारिस क्वालिटी निकाल दी तो महाराजा बन जायेंगे। बापदादा वारिस उसे कहते हैं जिसे देख करके और अनेक भी आयें।

➢ कुमारों को देख करके खुशी भी होती है लेकिन एक बात का डर भी

लगता है। समझदार हो इसलिए बोलने की आवश्यकता नहीं। ''बस एक बाप दूसरा न कोई''– यह पाठ सदा पक्का रहे, थोड़ा-थोड़ा भी दूसरा नहीं। नहीं तो ये ऐसी माया है जो गज और ग्राह की कहानी की तरह पूरा ही हप कर लेती है। तो डायमण्ड जुबली में यह डर निकाल देना। कोई भी कमी न रहे।

➢ अब युवा वर्ग ऐसी कमाल करके दिखाओ जो बाप का नाम हर युवा के चलन से, परिवर्तन से दिखाई दे। इसके लिए हर एक युवा को दिव्य दर्पण बनना है। आपके चेहरे से औरों को फरिश्ता व दिव्य गुणधारीमूर्त

दिखाई दे।

➢ एज्यूकेशन विंग वाले ऐसा प्लैन बनाओ जो गवर्मेन्ट स्वयं बोले कि हमारे विश्वविद्यालय इस विद्यालय के आगे कुछ नहीं हैं। अगर हैं तो ये हैं। यही है, यही है – ये बोले, तब एज्यूकेशन वालों को इनाम देंगे।

➢ डबल शक्ति वाले युवक डायमण्ड जुबली में क्या करेंगे? रेली निकालना, फंक्शन करना ये तो करते ही रहते हो। अभी हर एक युवा जो आजकल के अज्ञानी युवा एसोसिएशन हैं या ग्रुप हैं, जो देश में नुकसान करते हैं, गवर्मेन्ट को

भी तंग करते हैं, उन्हों को परिवर्तन करके दिखाओ। ऐसे एक्जैम्पुल तैयार करो। फिर सभी का मिलकर वे विशेष पंक्शन रखेंगे और उसमें गवर्मेन्ट के डिपॉर्टमेन्ट को दिखायेंगे कि ये युवा क्या करते हैं और वो युवा क्या करते हैं।

➢ युवा एक सेकण्ड में अपनी दृष्टि-वृत्ति द्वारा बाप का परिचय दे सकते हैं। कुमारों को अभी सेन्टर पर नहीं रखते क्योंकि कुमारों से दादियों को डर लगता है। कभी-कभी प्रैक्टिकल में नुकसान भी हो जाते हैं। लेकिन अगर कुमार पक्के योगी बन जायें, सिवाए आत्मा के और कोई बात में

जरा भी न जायें तो कुमारों को बहुत सेवावेकेन्द्र मिल सकते हैं। अभी नुकसान का डर है क्योंकि रावण की चीज़ अन्दर रखी है। इसलिए पहले दादियों को बेफिक्र बनाओ।

➢ भारत में अगर दो-तीन भाई सेन्टर चलायें तो पहले तो लोग डिस्कस करने के सिवाए और कुछ नहीं करेंगे और जोश होगा तो डण्डा भी लग सकता है। लेकिन अगर आप पक्के योगी बन गये तो सेवा का ऐसा चांस मिलेगा जो थोड़े समय में आपका खाता भी उतना ही जमा हो जायेगा। पहले बापदादा को दिल से गॉरन्टी दिलाओ। कई बच्चे

बापदादा को खून से भी लिखकर देते हैं लेकिन एक मास के बाद कुमार से युगल बनकर आते हैं। तो ऐसी गॉरन्टी नहीं चाहिये।

➢ युवा समय को भी समीप ला सकते हैं। समय समीप आ जायेगा और आपकी सेवा विशाल होती जायेगी। लेकिन सिर्फ ये पक्का निश्चय कर लो कि हम हैं ही योगी आत्मायें। शरीर के तरफ स्वप्न मात्र भी संकल्प नहीं जाये।

डायमण्ड जुबली में

कुमारियों प्रति इशारे

➢ अभी समाप्ति का समय समीप आ रहा है। डेट नहीं बतायेंगे। लेकिन समीप आ रहा है उसी प्रमाण सेवा में वृद्धि तो होनी ही है। इसलिए हर एक कुमारी को सेवा में लगना चाहिए। अगर खुद निर्बन्धन नहीं हो सकती, कोई कारण है तो अपने कोई न कोई हमजिन्स कुमारी को तैयार जरूर करो। कम से कम एक साल में एक को आप समान बनाओ।

➢ संगमयुग पर कुमारियों पर विशेष परमात्म-कृपा है। अगर संगम

पर परमात्म-कृपा के अधिकारी नहीं बने तो सारे कल्प में नहीं बनेंगे। अगर कोई ऐसी अयथार्थ बात है तो सुना सकते हो। शार्ट में लिख सकते हो, डरो नहीं। डरने के कारण अपनी परमात्म-कृपा का भाग्य नहीं गँवाओ। न अपने को तंग करो, न दूसरे को तंग करो। भाग्य अच्छा है। कुमारियाँ हिम्मत रखती हैं तभी सेन्टर खुलते हैं।

➢ फीमेल्स की भी ऐसी एसोसिएशन्स हैं और जहाँ-तहाँ हैं। तो कुमारियाँ भी ऐसी बिगड़ी हुई आत्माओं को परिवर्तन करके दिखाओ। ऐसी मातायें भी जो खराब

संग के कारण फंस गई हैं, दु:खी हैं उन्हें निकालो लेकिन ऐसी ऐसोसिएशन्स में नियम प्रमाण जाना, ऐसे नहीं चले जाना। जिनका बोल, चाल, चलन प्रभावशाली है, ऐसा ग्रुप माताओं का, चाहे कुमारियों का, चाहे यूथ का हो। अभी ये माला तैयार करो, तो आप माला में आ जायेंगे। बिगड़े हुए को सुधारो।

➢ बापदादा हर कुमारी में कमाल करने वाली शुभ भावना, शुभ कामना रखते हैं क्योंकि कुमारियाँ बहुत बन्धनों से फ्री हैं। अगर कुमारी पुरुषार्थ में अच्छी है तो उसको सेन्टर

वेः सेवाधारी का भाग्य मिलता है और सेन्टर पर अकेले नहीं लेकिन साथी भी मिल जाते हैं, जो एक-दो में मददगार होते हैं और दूसरा कमाने की कोई चिन्ता नहीं।

➢ कुमारियों का लक है, जो कहते हैं कि नौकरी छोड़कर आ जाओ। खुद कुमारी का लगाव पढ़ने या नौकरी करने में है तो ये उसका भाग्य हुआ। लेकिन कुमारियों को सेवा का चांस बहुत मिलता है जितना करना चाहें उतना कर सकती हैं।

➢ अगर कोई कहता है कि सेवा है ही नहीं, सेवा दिखाई नहीं देती है,

तो ब्रह्मा बाप कहते कि शिकारी को परखने की शक्ति नहीं है। जंगल पड़ा हुआ है और शिकारी कहे कि शिकार नहीं मिलता–ये कैसे हो सकता।

➢ कुमारियों को अपने आपको निर्बन्धन बनाने की विशेष सेवा करनी है। पहले अपने को निर्बन्धन बनाओ। कमजोर आत्माओं को देखकर घबराओ नहीं। सी फादर-मदर, फॉलो फादर-मदर। न कि कमज़ोर को फॉलो करो। तो कुमारियों को तो दिल में उछल आनी चाहिये कि बस सेवा करें और सेवा की सफलता का सितारा बनें, कमज़ोर नहीं।

डायमण्ड जुबली वर्ष में सेवा के विशेष इशारे

प्रवृत्ति वालों के प्रति

➢ हर प्रवृत्ति वाले अपने बच्चों को ऐसे मूल्य सिखाकर तैयार करें जो बच्चों का ग्रुप धारणा वाला ऐसा सैम्पुल हो, जो कॉलेज स्कूल में पढ़ते हैं, उनके आगे उन बच्चों को दिखायें। प्रवृत्ति वालों को अपने बच्चों के ग्रुप को तैयार करना चाहिए। तो एज्युकेशन का सर्टीफिकेट वो बच्चे हो जायेंगे। ऐसी नवीनता डायमण्ड जुबली में दिखाओ।

➢ प्रवृत्ति वालों को बापदादा एक

बात के लिए मुबारक देते हैं कि जब से प्रवृत्ति मार्ग वाले सेवा साथी बने हैं, तो सेवा में नाम बाला करने में एक्जैम्पुल बने हैं। पहले जो डर था कि ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी बनना माना घरबार छोड़ना.. अभी वह डर निकल गया है, अभी समझते हैं कि इन्हों का तो घर भी बहुत अच्छा चलता, धन्धा भी बहुत अच्छा चलता, खुद भी खुश रहते तो यह देख करके एक्जैम्पुल बन गये हो।

➢ अब बापदादा का डायमण्ड जुबली में सिर्फ एक शुभ संकल्प है कि जो प्रवृत्ति में रहते हैं, एक्जैम्पुल है, डबल सेवाधारी हैं तो प्रवृत्ति

वाले ऐसी सेवा करें जो हर सेवाकेन्द्र पर सभी 13 ही वर्गों का ग्रुप हो। कम से कम हर वर्ग का एक-एक तो होना ही चाहिए। फिर सभी सेन्टर के सभी वर्गों की डायमण्ड जुबली मनायेंगे।

➢ प्रवृत्ति वाले इस सारी पुरानी दुनिया को कमल पुष्प का तालाब बना दो। कभी कोई बूंद वा मिट्टी का प्रभाव न पड़े। याद रखो कि हम कमल हैं। न्यारे और बाप के प्यारे।

➢ पाण्डव जो जिस डिपॉर्टमेन्ट में काम करते हो तो लौकिक कार्य करते हुए भी अलौकिक चाल-चलन से

अपना प्रभाव डालो। डायमण्ड जुबली में नम्बर बढ़ाने के कार्य में सहयोगी बनो।

➢ बापदादा की प्रवृत्ति वालों से एक यही शुभ आशा है कि प्रवृत्ति वाले अपनी प्रवृत्ति को सम्भालो लेकिन एक-दो में साथी बन करके, किसी भी ढंग से मददगार बन माताओं को सेवा के लिए स्वतन्त्र करो। डायमण्ड जुबली में बापदादा की यह आश पूरी करना। जैसे कुमारियों की ट्रेनिंग रखते हैं ऐसे माताओं को 15 दिन की ट्रेनिंग देकर एक मास, दो मास, तीन मास सेवा की ट्रायल करो, अकेली छोटी-छोटी

कुमारियाँ समय प्रमाण नहीं रख सकते और माता हो तो एक मास में आप देखो कितने सेन्टर खुल जाते हैं। तो माताओं में जोश आना चाहिये।

देश विदेश में ईश्वरीय सेवाओं के लिए इशारे तथा भविष्य प्लैन

➢ डबल विदेशी हर एक स्टेट से एक-एक माइक भी लायें तो फिर माइक की सेरीमनी करेंगे।

➢ डायमण्ड जुबली में लास्ट में एक ऐसा प्रोग्राम करो जो सब तरफ के विशेष वी.आई.पी. पहुँचें। चाहे

विदेश, चाहे देश – दोनों तरफ से बी.आई.पी. ग्रुप पहुँचें। भल थोड़े लाओ लेकिन क्वालिटी लाओ जो एक-एक स्वयं सेवा करे। सेवा तो वृद्धि को प्राप्त हो रही है और होती रहेगी। होनी ही है। सिर्फ आप डायमण्ड बन जाओ तो चारो ओर आपकी चमक खींच करके लायेगी।

➢ जैसे मॉरीशियस के प्राइममिनिस्टर ने हिम्मत रखी, अपना प्रोग्राम दिया, ऐसे विदेश से अपना प्रोग्राम बनाकर यहाँ की मिनिस्ट्री की आंख खोलें कि दूर-दूर से आते हैं और हम यहीं रहे हुए हैं। ऐसा कोई लाओ जो एक अनेकों

को जगाये और सेवा में निमित्त बने। सेन्टर बढ़ रहे हैं, गीता पाठशालायें बढ़ रहीं हैं, ये तो होना ही है, ये अभी बड़ी बात नहीं है, कोई नवीनता करो। गीता पाठशालायें, सेन्टर और भी बढ़ाओ, लेकिन साथ-साथ माइक भी तैयार करो जो प्रत्यक्षता करें। देश-विदेश दोनों मिलकर प्रोग्राम कर रहे हो – ये बहुत अच्छा है और ऐसे ही सदा मिलकर एक-दो की राय से आगे बढ़ते रहो।

➢ अभी जहाँ तक ज्यादा से ज्यादा हो सके तो बनी-बनाई स्टेज़ पर आप चीफ गेस्ट हो, इस सेवा को और बढ़ाओ। इसके लिये जो भी बड़े-

बड़े एसोसिएशन हैं, कम्पनियाँ हैं, सोसाइटीज़ हैं, उनमें विशेष निमित्त आत्माओं को परिचय दे समीप लाओ।

➢ अभी ऐसे स्पीकर तैयार करो, सम्पर्क वालों को नॉलेज से समीप लाओ। अभी यही स्पीच करते हैं कि यहाँ प्रेम मिला, शान्ति अनुभव हुई वा ब्रह्मा बाप की कमाल है, यहाँ तक आये हैं लेकिन ब्रह्मा बाप में परम आत्मा की कमाल है – अभी वहाँ तक पहुँचाना है।

➢ अभी ऐसे पोज़ीशन वाले तैयार करो जिसका प्रभाव सुनने वालों पर पड़े। ऐसे ज्ञान वेः समीप लाओ जो वो परमात्म ज्ञान को स्वयं समझकर

स्पष्ट करें। मेहनत है इसमें। हर एक स्टेट में बड़े माइक के पहले ऐसे छोटे-बड़े स्पीकर तैयार करो।

➢ इस डायमण्ड जुबली वर्ष में बापदादा के पास कोई न कोई छोटा सा नेकलेस वा कंगन भी बनाकर जरूर लाओ। क्योंकि आत्मायें अन्दर टेन्शन से बहुत दु:खी हैं। बेचारों में आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं है। तो आप मास्टर सर्वशक्तिमान् उन्हों को हिम्मत की टांग दो। रहमदिल बनो। बाहर का शो तो बहुत अच्छा टिपटॉप है लेकिन अन्दर बहुत-बहुत दु:खी हैं। आप बहुत अच्छे समय पर बच्चा बने अर्थात् बच गये।

➢ यह वर्ष डायमण्ड जुबली का है और डायमण्ड जुबली की सेवा का उमंग-उत्साह चारों ओर देश-विदेश में अच्छा है और अच्छा रहेगा। अच्छा होना ही है। इसलिए यह वर्ष जितना जी भर करके सेवा करने चाहो उतनी करो। और डायमण्ड जुबली के कनेक्शन में जो भी, जहाँ भी, प्रोग्राम योग्य होगा, वहाँ दादियाँ जा सकती हैं। लेकिन दादियों की तबियत से सबको प्यार है इसलिए सोच समझकर निमन्त्रण दो।

➢ जब भी कोई प्रोग्राम बनाते हो तो यज्ञ को भी देखो क्योंकि जो निमित्त बड़ी दादियां हैं, उन्हों को यज्ञ के

वातावरण, यज्ञ की कारोबार को भी देखना है और आप भी सब जिम्मेवार हैं। बड़ों की स्थिति का स्थान पर प्रभाव पड़ता है। तो मधुबन की कारोबार, सेवायें, वातावरण, साथ-साथ दादियों की तबियत देखकर प्रोग्राम बनाओ। अगर किसी कारण से नहीं आ सकती तो नाराज़ न हो।

➢ बापदादा यह पूरी सीज़न सेवा के लिए छुट्टी दे रहे हैं फिर दिसम्बर में फॉरेन और इण्डिया दोनों के संगठन का प्रोग्राम शान्तिवन के उद्घाटन के साथ आरम्भ करेंगे और दिसम्बर के बाद फिर 18 जनवरी इण्डिया वालों के लिए और फॉरेन

वालों के लिए शिवरात्रि पर आयेंगे। फिर अप्रैल के आदि में एक फिर से मेला रखेंगे, जिसमें फॉरेन वाले भी हों और इण्डियन भी हों। इसके अनुसार एक तो चक्कर लगाओ और दूसरा ब्राह्मणों के रिफ्रेशमेंट के लिए कर्मातीत वा अशरीरी बनने के अभ्यास के लिए ग्रुप वाइज़ ब्राह्मणों का संगठन यहाँ रख सकते हो।

➢ वर्तमान समय चाहे देश में, चाहे विदेश में हलचल भी होनी ही है। तो जितना सेवा का चांस ले सकते हो उतना ले लो। साथ-साथ अशरीरी बनने के अभ्यास की ड्रिल करते रहो।

डायमण्ड तुल्य दादियों प्रति मधुर महावाक्य

➢ जितनी जिम्मेवारियाँ बढ़ती हैं उतना ही एक्स्ट्रा दुआएं और बाप का प्यार बढ़ता जाता है ना! जगदम्बा और ब्रह्मा बाप दोनों की जिम्मेवारियाँ स्थूल में आपके ऊपर (दादी जी पर) हैं। (बाबा साथ हैं) सूक्ष्म में तो साथ है लेकिन बाहर से तो निमित्त आप हैं। इसीलिए आपसे सभी का शुद्ध प्यार ज्यादा है। दादियों का भी है, विश्व का भी है।

➢ आपके त्याग और तपस्या का फल, प्रत्यक्षफल दिखा रहा है। डायमण्ड जुबली के नशे में, खुशी में और भी

सेवा आगे बढ़ सकती है। आप उमंग-उत्साह से बढ़ाते जायेंगे तो सेवा बढ़ जायेगी। आप निमित्त बनी हुई आत्मायें हिम्मत और उमंग दिलाने में लक्ष्य और दृढ़ रखो। कहाँ भी देखो सेवा में कोई थोड़ी सी थकावट या मेहनत फील करते हैं तो उन्हों को कोई न कोई सहयोग देकर उमंग-उत्साह बढ़ाओ।

➢ नैनों की भाषा से सर्व वरदान मिल गये, बाप के स्नेह और हिम्मत के हाथ सदा मस्तक पर है ही हैं। आप निमित्त बनी हुए आत्माओं के कारण डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। डायमण्ड जुबली के लास्ट में 'बाप आ गया' – ये झण्डा लहराओ।

डायमण्ड जुबली में यह नवीनता होनी चाहिये। बच्चे बाप से वंचित रह जायें तो रहम पड़ता है ना! अनाथ बन गये हैं। उन्हों को बाप का परिचय दो।

➢ सभी का सहयोग यह सहज ही आपको और सेवा को बढ़ा रहा है। आपका काम है देख-देख हर्षित होना। उमंग-उत्साह बढ़ाना।

➢ सेवा भी एक खेल है। खेल में चाहे कोई गिरता है, कोई जीतता है लेकिन खेल में सदा खुशी होती है तो खेल देख-देख कर खुश होते रहते हो। खुशी बढ़ाना, उमंग-उत्साह बढ़ाना और स्व-पुरूषार्थ बढ़ाना–आपको अभी

यही खेल करना है और औरों को खेल में अच्छे खिलाड़ी बनाना है।

➢ ''सदा जीते रहो, उड़ते रहो और उड़ाते रहो''। समय प्रमाण फास्ट चक्कर नहीं लगाओ। आराम से जाओ और आओ क्योंकि दुनिया की परिस्थितियाँ भी फास्ट बदल रही हैं। इसलिए सेवा की बापदादा मना नहीं करते हैं, लेकिन बैलेन्स। सभी के प्राण आपके शरीरों में हैं, तन ठीक है तो सेवा भी अच्छी होती जायेगी। इसलिए सेवा खूब करो लेकिन ज्यादा धक्का नहीं लगाओ।

➢ दैवी परिवार का विशेष श्रृंगार

हो। बाकी सब अच्छा है और सदा अच्छा रहना ही है। खिटखिट भी चलनी है और खिटखिट में अच्छाई भरी हुई है। संसार सागर है और ब्राह्मणों का स्टीमर संसार में चल रहा है, पार कर रहा है। सागर में ऊंची या उल्टी लहरें आती हैं लेकिन मंजिल पर पहुंचना ही है। लहरें अपना खेल दिखलायेंगी लेकिन साक्षी बनकर सीट पर बैठकर खेल देखो। बातों में गये तो चक्रव्युह में फंस जायेंगे। समय की विधि और पुरूषार्थ की स्टेज बदलती रहती है इसलिए साक्षी होकर खेल देखते जाओ। फुलस्टॉप लगाओ और आगे बढ़ो।

➢ यह आदि काल वेः रत्नों वेः त्याग का भाग्य है, इन्हों वेः त्याग ने आप सबको लाया है, यह निःस्वार्थ सेवाधारी हैं इसलिए इनसे किसको ईर्ष्या नहीं होती, खुशी होती है। तो खूब धूमधाम से डायमण्ड जुबली मनाओ।

➢ आदि रत्नों को बाप वेः साथ का अनुभव करना बहुत सहज है क्योंकि साकार में साथ का अनुभव किया है। इन्होंने तुम्हीं साथ रहना, खाना, चलना, फिरना...यह प्रैक्टिकल साकार में अनुभव किया है। तो

साकार में अनुभव की हुई चीज़ सहज याद रहती है। ये इन्हों का लक है कि बाप के साथ का अनुभव ये जब चाहें तब कर सकते हैं।

➢ सबको इन निमित्त रत्नों से प्यार है क्योंकि इन्हों का बाप से हर श्वास में प्यार है, हर श्वास में बाबा-बाबा नेचरल है, मेहनत नहीं है क्योंकि साकार में निमित्त हैं, बाप समान हैं।